॥ सुख शांति समृद्धि ॥

RNI NO. : MAHHIN / 2012 / 47712

वर्ष : ३ ◆ हिन्दी मासिक ● मुंबई ● फरवरी २०१५ ◆ संपादक : जीतु सोमपुरा ◆ पृष्ठ - ८ ◆ मूल्य : २ रुपये

आओ; ब्रह्मा बाबा द्वारा उच्चारित परमात्मा शिव के महावाक्यों की ज्ञान गंगा में स्नान करके जीवन के प्रश्नों के उत्तर पाये

- सम्पूर्ण सफलता के लिये उदारता का गुण धारण करो।
- जो अपने आपको भूलता है वही अनेक भूलों के निमित्त बनता है।
- आपको मिला हुआ कार्य आप से अच्छा कोई नहीं कर सकता।
- दूसरों के अवगुण न देखना ही सबसे बड़ा त्याग है।
- सबसे बड़ी सेवा है जीवन की खुशियों को दूसरों के साथ बाँटना।
- यदि आप दूसरों की कमज़ोरियाँ अपने मन में रखते हैं तो शीघ्र ही वे आपका अंग बन जायेंगी।
- भगवान की इच्छाओं को पूर्ण करने से हमारी इच्छायें स्वतः ही पूरी हो जाती है।
- ज्ञान सबसे बड़ा धन है। स्वयं से पूछें – ''मैं कितना धनवान हूँ?''
- अगर आप सदा स्वयं की दूसरों के साथ तुलना करते रहते हैं तो आप अवश्य ही अहंकार ईर्ष्या के शिकार हो जायेंगे।
- यदि हर कार्य यह समझकर किया जाये कि भगवान मेरा साथी है तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जायेगा।
- आप जितना कम बोलेंगे, दूसरे व्यक्ति उतना ही अधिक ध्यान से सुनेंगे।

वे व्यक्ति अकेले नहीं हैं, जिनके साथ सुन्दर विचार हैं

अब नहीं तो कब नहीं

- आप अपनी समस्याओं का कारण और निवारण स्वयं हैं।
- प्रत्येक मनुष्यात्मा अपने भाग्य और समय का निर्माता स्वयं होता है।
- धर्म का मूल तत्व ईश्वरीय गुणों की जीवन में प्रत्यक्ष धारणा है।
- उपकार, दया और क्षमा मानव जीवन के उत्कर्ष की सीढ़ी है।
- एक नई सोच आपकी दुनिया बदल सकती है।
- हर घड़ी को अंतिम घड़ी समझो।
- ईश्वरीय प्यार सर्व सुखों की चॉबी है।
- प्रेम, दया, सहानुभूति ऐसे गुण हैं जो बदले में ब्याज सहित मिलते हैं।
- आपकी अंतरात्मा आपका सच्चा मित्र है, उसे बार–बार सुनें।
- अपनी नज़रो में बाप को समा लो तो माया की नज़र से बच जायेंगे।
- बीती को बिन्दी लगाकर हिम्मत से आगे बढ़ो तो बाप की मदद मिलती रहेगी।
- ज्यादा बोलने से दिमाग की एनर्जी कम हो जाती है, इसलिये शार्ट और स्वीट बोलो।
- जिनका सोचना, बोलना और करना समान है वही सर्वोत्तम पुरुषार्थी है।

संपादकीय

सुख शांति समृद्धि मासिक पत्रिका के ''तृतीय वर्ष प्रवेश विशिष्ट विशेषांक'' में जीवन के प्रश्नों के उत्तर

हमारे प्रिय पाठकों का जीवन सुख शांति समृद्धि से भरा रहें ऐसी शुभकामना के साथ हमने सुख शांति समृद्धि मासिक पत्रिका के प्रकाशन का आरंभ किया था। अब इस पत्रिका का तृतीय वर्ष में प्रवेश हो चुका है।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्माबाबा के 45 वे अव्यक्त दिवस के उपलक्ष्य में इस विशिष्ठ अंक में हमारे जीवन के प्रश्नों के उत्तर समायें हुए है। ब्रह्माबाबा के द्वारा उच्चारित परमात्म महावाक्यों को हमनें जीवन में अपनाया तो हमारा जीवन मार्ग सरल बनेगा। जीवन में नवीन उमंग, उत्साह और शक्ति का संचार होगा। हम राष्ट्र के विकास की दिशा में आगे कदम बढ़ा सकेंगे। आईयें हम सब मिलकर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की विविध कल्याणकारी योजनाओं में सहभागी बनें। हमसे हो सकें उससे ज्यादा अपनी जिम्मेदारी निभायेंगे तो हम सबके जीवन में सुख शांति समृद्धि होगी। अच्छे दिन आयेगें। हमारे सारे स्वप्न परिपूर्ण होगें ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

जीतु सोमपुरा

संपादक : सुख शांति समृद्धि मासिक पत्रिका

इस अंक में आप के जीवन के प्रश्नों के उत्तर ब्रह्मा बाबा द्वारा उच्चारित परमात्मा शिव के कौन से महावाक्यों में है?

- अच्छे वायब्रेशन निगेटीव को भी पॉजिटिव में बदल देते हैं।
- ज्ञान का अर्थ है अनुभव करना और दूसरों को भी अनुभवी बनाना।
- हिम्मत का पहला कदम आगे बढ़ाओ तो परमात्मा की सम्पूर्ण मदद मिलेगी।
- सदा मुस्कराते रहना सन्तुष्टता की निशानी है।
- उदासी को अपनी दासी बनाओ, उसे चेहरे पर नहीं आने दो।
- स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो तो आपके वायब्रेशन से दूसरों की माया सहज भाग जायेगी।
- आपके जीवन का श्वास खुशी है शरीर भले चला जाये लेकिन खुशी न जाये।
- श्रेष्ठ संकल्प का एक कदम आपका और सहयोग के हज़ार कदम परमात्मा के।
- खुशी के खजाने से सम्पन्न और खुशी की खुराक से तन्दुरुस्त बनो।
- लौकिक कार्य करते अलौकिकता का अनुभव करना ही सरेन्डर होना है।
- दृढता ही सफलता की चाबी है।
- अज्ञान की शक्ति क्रोध है और ज्ञान की शक्ति शान्ति है।

विपत्तियों का सहने का बल केवल ईश्वर की याद से ही मिलता है

अपनी शक्तियों को पहचानो, संसार तुम्हें पहचानेगा

- श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने की कलम है – श्रेष्ठ कर्म।
- दिल से सेवा करो तो दुआओं का दरवाजा खुल जायेगा।
- परमात्मा अवार्ड लेने के लिए व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड करो।
- कथनी, करनी और रहनी एक करो।
- समस्या स्वरुप नहीं, समाधान स्वरुप बनो।
- निश्चय में ही विजय समायी रहती है।
- सफलता पवित्र आत्माओं का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।
- खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं।
- कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो।
- बदला नहीं लो, बदल के दिखाओ।
- जैसा करेंगे वैसा पायेंगे।
- मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।
- अब नहीं तो कब नहीं।
- जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।
- संग तारे कुसंग बोरे।
- पर–चिन्तन पतन की जड़ है, स्व–चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है।
- मांगने से मरना भला।
- चिन्ता छोड़, प्रभु चिन्तन करो।
- निश्चिन्ता से नव जीवन का आव्हान करो।
- एकान्तप्रिय बनो तो बाह्यमुखता अच्छी नहीं लगेगी।
- रोते हुए को हंसना सिखाना, गिरे हुए को ऊपर उठाना यह सच्ची मानवता है।

सबसे बड़ी कला है मन को ईश्वर में लगाना

- क्रोध अनेक बिमारियों की जड़ है, शान्ति सर्वश्रेष्ठ औषधी है।
- धैर्यता, सहनशीलता और विश्वास ही सफलता की चाबी है।
- हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझने वाला ही एवररेडी आत्मा है।
- हाँ जी करने वाला ही दुआओं का पात्र है।
- जैसा कर्म हम करेंगे, हमें देख और करेंगे।
- सबसे बड़ा ज्ञानी वह है जो आत्म–अभिमानी है।
- जहाँ चाह है वहाँ राह मिल ही जाती है।
- यह संसार हार और जीत का खेल है – इसे नाटक समझ कर खेलो।
- अपनी इच्छा को कम कर दो तो समस्या कम हो जायेगी।
- फट से किसी का नुक्स निकालना, यह भी दुःख देना है।
- अगर सद्गति चाहिए तो ईश्वर से सद्मति लो।
- साहस सभी गुणों का राजा है, सन्तुष्टता सभी गुणों की रानी है।
- अपने विचारों को चन्दन के समान खुशबूदार बनाओ।
- क्रोध मनुष्य के उज्जवल भविष्य को बिगाड़ देता है।
- शुद्ध संकल्प हमारे जीवन का अमूल्य खज़ाना हैं।
- हमारे संकल्प वही हों जिनसे अपना और दूसरों का कल्याण हो।
- राजयोग जीवन जीने की कला सिखाता है, इससे मनोबल व आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
- जीवन का सच्चा विश्राम आत्म–अनुभूति में है।
- संसार में भयंकर आँधी–तूफान के समय एक भगवान ही श्रेष्ठ रक्षक है।

निराकार परमपिता शिव परमात्मा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक

परमपिता शिव परमात्मा अति प्रिय, ज्योतिस्वरुप हैं। उनका कोई भी स्थूल आकार नहीं है और वे इस सांसारिक जन्म–मरण के चक्र से न्यारे हैं। वे सर्व आत्माओं के माता–पिता, बन्धु–सखा तथा सत्य ज्ञान देने वाले सद्गुरु हैं। वे हमारे आध्यात्मिक मार्ग–दर्शक और शिक्षक भी हैं। उनसे सदैव प्रेम, शान्ति, दिव्य प्रकाश, आध्यात्मिक शक्ति तथा सुख की किरणें प्रस्फुटित होती रहती हैं। उन्होंने ही पिताश्री प्रजापिता ब्रहमा के साकार माध्यम से संस्था की 1936 में स्थापना की है। शिव परमात्मा के साकार माध्यम ब्रह्मा बाबा द्वारा उच्चारे हुए महावाक्यों के आधार पर जिनका अलौलिक और आध्यात्मिक पुनर्जन्म हुआ वे ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार कहलाए तथा इस शैक्षणिक संस्था को नाम मिला ''प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय''।

अपनी इच्छा को कम कर दो तो समस्या कम हो जायेगी।

- दूसरों को गुणों के आधार पर आगे रखना भी अपने को आगे बढ़ाना है।
- स्वभाव को सरल बनाओ तो समय व्यर्थ नहीं जायेगा।
- दूसरों के दोष न देखो, अपने अन्दर के दोष देखो तो निर्दोष बन जायेंगे।
- अब भगवान से फरियाद करने के बजाय उसे याद करो।
- दूसरों के अवगुण न देखना ही सबसे बड़ा त्याग है।
- विपत्तियों का सहने का बल केवल ईश्वर की याद से ही मिलता है।
- मुश्किलों को प्रभु अर्पण कर दो तो हर मुश्किल सहज हो जायेगी।
- सम्पूर्ण अहिंसा अर्थात संकल्प द्वारा भी किसको दुःख न देना।
- सुनने–सुनाने में भावना और भाव को बदल देना वायुमण्डल खराब करना है।
- अपनी सूक्ष्म कमज़ोरियों का चिन्तन करके उन्हें मिटा देना – यही स्व–चिन्तन है।
- ईश्वर से बुद्धि की लगन लगाना ही ईश्वर का सहारा लेना है।
- सत्य के सूर्य को कभी असत्य के बादल ढक नहीं सकते।
- इच्छाएं रखने वाला कभी अच्छा कर्म नहीं कर सकता ।
- जैसा लक्ष्य रखेंगे वैसे लक्षण स्वतः आयेंगे।
- आशीर्वाद प्राप्त करना हो तो पुण्यात्मा बनो।
- गुण चोर बनो तो सब अवगुण रुपी चोर भाग जायेंगे।
- स्वभाव को सरल बनाओ तो समय व्यर्थ नहीं जायेगा।
- दिव्य गुण ही मानव का सच्चा श्रृंगार है।
- एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आन्नद प्राप्त हो सकता है।
- दुःखों से भरी इस दुनिया में वास्तविक सम्पत्ति धन नहीं, संतुष्टता है।
- धन का दान करना अच्छा है परन्तु पवित्र, दानशील आत्मा बनना और भी अधिक अच्छा है। अपनी शक्तियों व गुणों का प्रयोग दूसरों की उन्नति हेतु कीजिए।
- अपनी उन्नति का प्रयत्न करते रहिए। स्वयं को पतन की ओर मत लग जाइए, क्योंकि व्यक्ति स्वयं ही अपना मित्र भी है और स्वयं ही अपना शत्रु भी।

हिम्मत का पहला कदम आगे बढ़ाओ तो परमात्मा की सम्पूर्ण मदद मिलेगी।

- गम्भीरता का गुण धारण कर लो तो व्यर्थ टकराव से बच जायेंगे।
- स्वयं को बचाव करने के लिये कभी दूसरों को दोषारोपण न करें, क्योंकि समय के पास सत्य को प्रकट करने का अपना तरीका है।
- यदि आप प्रसन्नचित्त रहना चाहते हैं तो अपनी विशेषताओं के लिये स्वयं को तथा दूसरों की विशेषताओं के लिए उन्हें धन्यवाद दें।
- यदि आप गपोड़शंख लोगों के साथ सहमत हो जाते हैं तो उनकी निन्दा के अगले पात्र आप ही होंगे।
- यदि कोई आप पर हँसता है तो खिन्न न हों क्योंकि कम–से–कम आप उसे खुशी तो दे रहे हैं।
- न किसी के धोखे में आओ, न किसी को धोखे में डालो।
- सबसे बड़ी सेवा है जीवन की खुशियों को दूसरों के साथ बाँटना।
- रिस्पेक्ट माँगने से नहीं, धारणा करने से मिलता है।
- किसी दूसरे व्यक्ति को विपत्ति में देखकर हँसना आपकी अज्ञानता दर्शाता है।
- आप अपने जीवन का महत्त्व समझकर चलो तो दूसरे भी महत्त्व देंगे।
- अच्छा संग आगे बढ़ने का बल और हिम्मत देता है।
- जो बात आपकी खुशी को नष्ट करने वाली हो – उसे कभी नहीं सुनो।

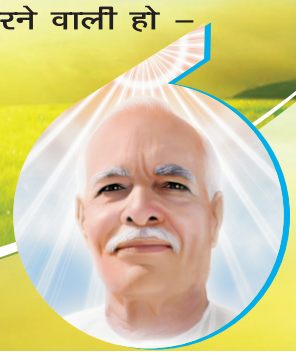

- दूसरों को बदलने का प्रयत्न करने के बजाए स्वयं को बदल लेना कहीं अधिक अच्छा है।
- स्वयं एक समस्या बनने के बजाय क्यों न हम दूसरों की समस्यायें हल करने में सहायक बन जायें?
- किसी से प्रतियोगिता करने के बजाए उसकी सहायता करना बेहतर है।
- यह आँखें प्रभु का विशेष उपहार हैं, इनके द्वारा दूसरों को प्रेम, शान्ति व खुशी का दान करो।

अगर आप जीवन के प्रश्नों के हल ढुंढ रहे हैं तो आश्चर्यजनक उत्तरो के लिये तैयार रहिए

- यदि हमारा पैर फिसल जाये तो हम संभल सकते हैं, परन्तु जुबान फिसल जाये तो यह गहरा घाव कर देती है, इसलिए सावधान रहिये।
- मन के संकल्पों को बीच–बीच में रोकने का अभ्यास कर लें तो थकावट नहीं होगी।
- यदि आप दूसरों की कमज़ोरियाँ अपने मन में रखते हैं तो शीघ्र ही वे आपका अंग बन जायेंगी।
- भगवान का बच्चा होने का अर्थ है, उनकी विशेषताओं को स्वयं में प्रत्यक्ष करना।

प्रजापिता ब्रह्मा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक ''ब्रह्मा बाबा'' शान्ति, प्रवित्रता, दिव्य ज्ञान और आध्यत्मिक शक्तियों के स्तम्भ थे। वे बहुत ही विशाल हृदय, विस्तृत विचारधारा वाले और दूरांदेशी थे। वे उच्च कोटि के ज्ञानी थे। आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग के ऊपर प्रभुत्व के कारण उन्होंने निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति को प्राप्त किया। परमात्मा के प्रति अगाध प्रेम एवं दृढ़ निश्चय ने उन्हें विघ्न–विनाशक बना दिया जिससे वे मायाजीत एवं कर्मातीत बन गए।

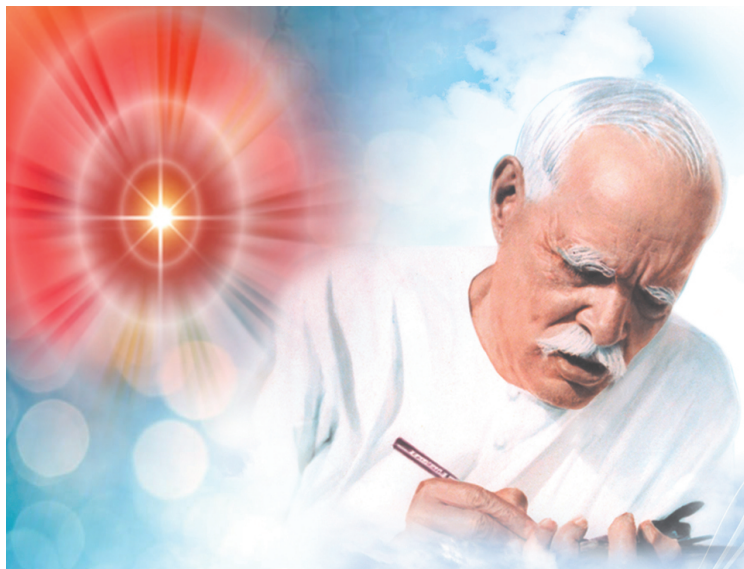

खुदा का खत.....

मीठे बच्चे,

आज सवेरे जब आप निन्द्रा से उठे, तब एक आशा लिये मैं आपको देख रहा था कि आप जरुर मुझसे कुछ बातें करेंगे। चाहे केवल थोड़े ही शब्दों में क्यों न हों, मगर आप मुझसे अवश्य ही कुछ बातें करेंगे। आप मेरा अभिप्राय जानना चाहेंगे या फिर कल आपके जीवन में जो-जो भी शुभ घटनायें घटी, आप उसके लिये मुझे धन्यवाद अवश्य देंगे। किन्तु मैंने देखा कि आप अत्यन्त ही व्यस्त थे। कार्य-स्थल पर पहुँचने की जल्दी में आप अपने प्रातःकार्यो से निपटने में रत थे। मैंने सोचा कि जब आप अपने प्रातःकार्यो से निपट लेंगे तब आप मुझे याद करेंगे...और मैं प्रतीक्षा करता रहा...जब आप तैयार होकर घर से निकल पड़े, तब मैं समझता था कि कुछ मिनट ठहरकर आप मुझे नमस्कार या 'हेलो' तो जरुर करोगे। किन्तु मैंने देखा कि आप तब भी बहुत व्यस्त थे और आप मुझसे बात किये बिना ही अपने कार्य-स्थल पर पहुँच गये। कार्य-स्थल पर पहुँचने के बाद भी आपके पास पर्याप्त समय था मुझे याद करने के लिए, परन्तु आपने मुझे याद नहीं किया बल्कि आप उठे और फोन उठाकर अपने किसी मित्र से गपशप करने लगे। मैंने सोचा शायद अपने मित्र से बात करने के बाद आपको मुझ 'खुदा दोस्त' की याद अवश्य आयेगी और आप मुझसे जरुर कुछ बात करेंगे...और मैं प्रतीक्षा करता रहा...

पहली मुख्य प्रशासिका
राजयोगिनी
श्री जगदम्बा सरस्वती जी

भुतपूर्व मुख्य प्रशासिका
राजयोगिनी
दादी श्री प्रकाशमणी जी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय संस्था आज भारत और विश्व के लगभग 133 से ज्यादा देशों में अपनी 8000 से भी अधिक शाखाओं के साथ विशाल वृटवृक्ष की भाँति विकसित हो गई है। इन सेवा केन्द्रों पर लाखों विद्यार्थी प्रतिदिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण करते हैं और राजयोग का अभ्यास करते हैं। यहाँ मधुरता और वैराग्य का अनूठा संगम है। यह देश-विदेश के आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को सहज आकर्षित करता है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक जीवन्त सामाजिक प्रयोगशाला

संपादक : जीतु सोमपुरा मोबाईल – ०९३२४४४६४८७ ई-मेल – jitusompura@yahoo.co.in

आपकी इन प्रवृत्तियों को देखकर मैंने अनुमान लगाया कि आप इतने व्यस्त थे जो आपके पास मुझसे बात तक करने को समय नहीं है...और मैं धैर्यतापूर्वक आपको कार्य करते हुए देखता रहा तथा इन्तजार करता रहा कि कब आप समय निकाल कर मुझसे बात करेंगे। भोजन के पूर्व जब आपने आसपास नज़र दौड़ाई तो मुझे लगा था कि शायद आप मुझसे बात करने के लिये व्याकुल हैं। परन्तु आप मुझे नहीं बल्कि अपने किसी अन्य मित्र को देख रहे थे जिस पर नज़र पड़ते ही आपने उसे अपने पास बुलाया और साथ खाने के लिए कहा। आपने मुझे एक बार भी याद नहीं किया..और मैं प्रतीक्षा करता रहा कि शायद आप मुझे याद करेंगे.....

जब कार्य-स्थल से वापस अपने घर पहुँचे तब मैंने यह आश रखी थी कि अब तो आप अवश्य मुझसे बातें करेंगे। परन्तु कुछेक कार्य पूर्ण हो जाने के बाद आपने टी.वी. चालू किया और उसके सामने बैठ गये। मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि आपको टी.वी. इतना पसन्द क्यों है? प्रतिदिन आप टी.वी. देखने में अपना बहुत समय व्यय करते है। मैं सब्रपूर्वक आपका इन्तज़ार करता रहा और आशा भरी निगाहों से आपको टी.वी. देखते हुए, रात्रि-भोजन लेते हूए, गप-शप करते हुए निहारता रहा कि शायद आप मुझसे बात करेंगे परन्तु आपने मुझसे कोई बात-चीत नहीं की। थके हारे जब आप अपने बिस्तर की ओर जा रहे थे तो मैंने सोचा कि सोने से पहले आप अवश्य ही मुझे याद करेंगे और मुझसे कुछ क्षण बात करेंगे। परन्तु अपने परिवारजनों को शुभरात्रि कहते हुए आप बिस्तर पर लेट गये और कुछ ही क्षणों में आप निन्द्राधिन हो गये...और मैं प्रतीक्षा करता रहा...

शायद आपको यह अहसास ही नहीं होगा कि मैं सदा आपके आस-पास ही रहता हूँ। मेरे पास आपको देने के लिये बहुत कुछ है और मैं वो सब आपको देना चाहता हूँ। मैं आपको इतना अधिक प्यार करता हूँ कि मैं हर रोज आपकी आराधना, आपके दिल का प्यार, हृदय के उद्‌गारों को सुनने की प्रतीक्षा करता रहता हूँ। अच्छा फिर से आप सोकर उठ रहे है और मैं...फिर एक बार प्रतीक्षा कर रहा हूँ...दिल में आपके प्रति बेहद प्यार लेकर, इसी आशा में कि आप आज तो मेरे लिये जरुर कुछ समय निकालेंगे.....

आपका मित्र,

खुदा दोस्त

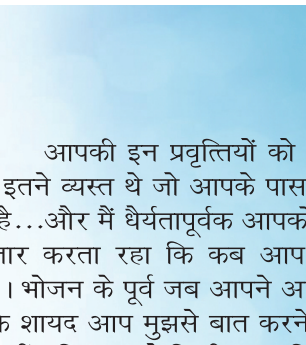

सह-मुख्य प्रशासिका
राजयोगिनी
दादी श्री हृदय मोहिनी जी

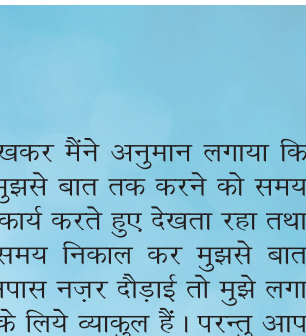

संयुक्त मुख्य प्रशासिका
राजयोगिनी
दादी श्री रतनमोहिनी जी

और विश्व के नव-निर्माण के लिए आत्मनिर्भर मनीषियों का समुदाय है। इसकी सबसे पहली मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी जगदम्बा सरस्वती जी थीं, उन्हें जगत-माता के रुप में सम्मान मिला। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की भूतपूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी श्री प्रकाशमणी जी थी। वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी श्री जानकी जी और सह-मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी श्री हृदय मोहिनी जी हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी है।

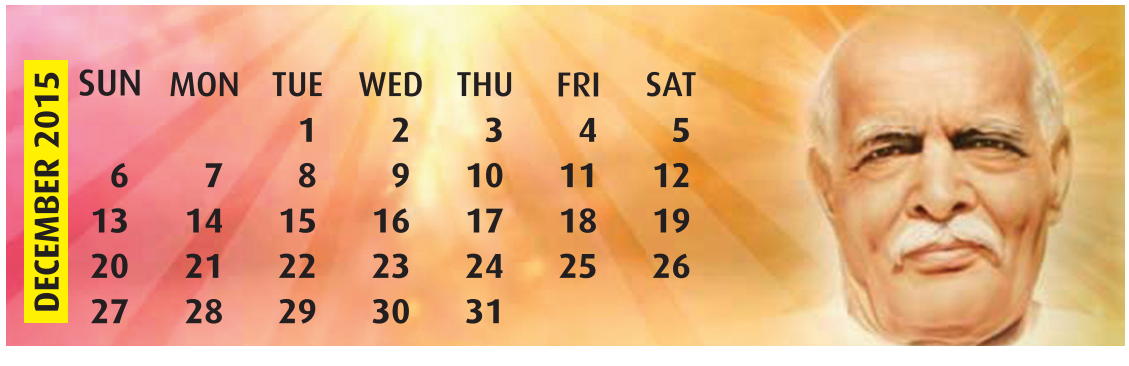

व्यस्त मन-बुद्धि को सेकण्ड में स्टॉप कर लेना ही सर्वश्रेष्ठ अभ्यास है

- शरीर भोजन को देने के साथ–साथ आत्मा को ईश्वरीय स्मृति और शक्ति का भोजन दो।
- विपत्तियों को सहने का बल केवल ईश्वर की याद से ही मिलता है।
- 'मैं कौन हूँ' पहेली को हल करो तो जीवन की सर्व समस्याएं हल हो जायेंगी।
- सदा प्रसन्नचित्त रहो तो सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे।
- मनोबल व आत्मविश्वास में वृद्धि करने के लिये कुछ पल राजयोग का अभ्यास जरुरी है।
- बहुत गई थोड़ी रही थोड़ी भी अब जाये। शिव कहे सुन आत्मा, क्यूँ व्यथ समय गंवाये।
- तुम्हारा जन्म महान कार्यों के लिये हुआ है, अब अपने जन्म को सफल करो।
- मन प्रभु की अमानत है इसलिये सदैव श्रेष्ठ संकल्प करो।
- यदि आपका व्यवहार श्रेष्ठ है तो आपका हृदय प्रसन्नता और आन्नद से भरपूर रहेगा।
- आप मंनोरंजन से जीवन का आनन्द अवश्ल लें, परन्तु यह जाँच करें कि क्या इससे आपका जीवन आन्तरिक रुप से समृद्ध बनता है?
- अपनी सारी आशायें भगवान पर छोड़ दें, तब किसी भी व्यक्ति से कोई निराशा नहीं मिलेगी।
- दो सबसे महान चिकित्सक हैं – परमात्मा और समय।
- चिन्ताग्रस्त व्यक्ति मृत्यु से पहले कई बार मरता है।
- हथियार स्वयं खतरनाक नहीं होते परन्तु मानव के अन्दर छिपा क्रोध ही उन्हें हानिकारक बना देता है।
- अगर आप प्रश्नों के हल ढूंढ रहे हैं तो आश्चर्यजनक उत्तरों के लिये तैयार रहिए।
- यदि आप अकेले हैं तो आपका कोई महत्व नहीं, परन्तु यदि आप संगठन में स्नेहशील, रमणीक व सहयोगी होकर रहते हैं तो आप मूल्यवान हैं।
- यदि हम अपनी प्रशंसा व ख्याति सुनकर फूले नहीं समाते, तो निन्दा व अपमान हमें बरबाद कर देंगे।
- अपने मार्ग में आने वाले किसी भी विघ्न से घबरायें नहीं। हर विघ्न को उन्नति की ओर ले जाने वाली सीढ़ी समझें।
- किसी को समझाने के लिये कड़ी दृष्टि का प्रयोग करना तो ठीक है परन्तु किसी पर हाथ उठाना आपकी अपनी कमज़ोरी दर्शाता है।
- संसार में समस्यायें बढ़ेगी, इसलिये मुझे समस्याओं का सामना करने की अपनी क्षमता को बढ़ाना चाहिए।

अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बना कर कमजोरियों को समाप्त करो

सकारात्मक विचारों की शक्ति से सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कीजिये

- यदि आप अपना अवगुणों रुपी कचरा भगवान को दे दें तो कोई भी व्यक्ति आप पर कीचड़ नहीं उछालेगा।
- जिन चार बातों ने हमारे जीवन को बरबाद किया है, वे हैं ''मैं'' व ''मेरा'', ''तू'' व ''तेरा'' अतः इन्हें भूल जाइये।
- यदि आप मृत्यु से भयभीत होते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप जीवन का महत्व ही नहीं समझते।
- हम सितारों की दूरी तथा समुद्र की गहराई का अन्वेषण करते हैं परन्तु हम कौन हैं तथा इस संसार में क्यों आये हैं, इस विषय में कितना जानते हैं?
- हमें अपने गुणों की विस्मृति हो सकती है परन्तु परमात्मा हमारे गुणों को कभी नहीं भूलते।
- यदि कोई आपसे नाराज है और आपको बुरा–भला कह रहा है, अगर उस समय आप यह प्रश्न करें कि वह ऐसा क्यों कह रहा है तो यह आग में घी डालने जैसा होगा।
- जब ईर्ष्या अपना घिनौना सिर उठाती है तो हमारे प्रियजन भी हमारे शत्रु बन जाते हैं।
- जब आप स्वयं से प्रेम करना सीख लेंगे तो दूसरे आपसे नफ़रत करना छोड़ देंगे।

राजयोग से मन स्वच्छ और बुद्धि दिव्य बनती है

- पवित्रता मन–वचन–कर्म से अपनाना है।
- सरल स्वभाव, कार्य को सरल बना देता है।
- जीवन में मधुरता का स्वाद अनुभव करने के लिये बीती को भूलने की शक्ति चाहिए।
- यदि मैं वर्तमान ठीक रखूँ तो आने वाले समय के ठीक होने की संभावनायें बढ़ जाती हैं।
- स्वयं की उन्नति में अधिक समय देंगे तो दूसरों की निन्दा करने का समय नहीं मिलेगा।

कर्मो की ध्वनि, शब्दों से ऊँची है।

- ''प्रसन्नता'' मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार है।
- परीक्षायें ही मनुष्य को मजबुत बनाती हैं।
- शुद्ध संकल्प हमारे जीवन का अनमोल खजाना है।
- ''ब्रह्मचर्य'' सबसे बड़ा टॉनिक है।
- अपवित्र विचार मनुष्य को बरबाद कर देते हैं।
- भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है।
- चिकित्सा की अपेक्षा रोगों से बचाव श्रेष्ठ है।
- विचारों से ही हम उठते हैं और विचारों से ही हम गिरते हैं।

बी. के. अशोक कुमार
उपाध्याय

माताजी बी. के. शरवती
उपाध्याय

(पांडव भवन, माउन्ट आबू, राजस्थान)

हम आभारी हैं इस अंक के सहयोगी के

सुख शांति समृद्धि हिन्दी मासिक समाचार पत्र, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : जीतु सोमपुरा ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. ७, उद्योग भवन, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, वालभट्ट रोड़, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई – ४०००६३ से मुद्रित कर ३२ – प्रेस एन्कलेव, ६३ – वैद्य नगर, दत्तानी स्कूल के सामने, टाटा पावर हाऊस, बोरीवली (पूर्व), मुंबई – ६६ महाराष्ट्र से प्रकाशित किया।
संपादक : जीतु सोमपुरा मोबाईल – ०९३२४४४६४८७ ई-मेल – jitusompura@yahoo.co.in

श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने की कलम है

- आपकी मुस्कराहट दूसरों के जीवन में प्रकाश की किरणें बिखेरती है।
- जीवन तपस्या करके ही निखरता है।
- विचारों की पवित्रता सबसे महान है।
- हमारी पहचान हमारे कपड़े नहीं, कर्म हैं।

- उपकार, दया और क्षमा मानव जीवन के उत्कर्ष की सीढ़ी है।
- स्वधर्म में स्थित होकर कर्म करने वाले में ही धर्मात्मा है।
- श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने की कलम है।
- हर्षितमुख चेहरा ही पवित्र जीवन का दर्पण है।
- विघ्नों को सदा खेल समझकर चलो तो जीवन में कभी फेल नहीं होंगे।
- पवित्रता ही सर्व समस्याओं का समाधान है।
- शुद्ध विचार आपके जीवन की अमूल्य पूंजी है।
- सद्व्यवहार और परोपकार सर्व कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कलाएं है।
- मन–बुद्धि को आर्डर प्रमाण चलाना ही सच्ची साधना है।
- श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने का कलम श्रेष्ठ कर्म है।
- नम्रता का गुण धारण कर लो तो सब नमन करेंगे।

पवित्र विचार मानव जीवन की श्रेष्ठ शक्ति हैं।

- आप अपनी समस्याओं का कारण और निवारण स्वयं हैं।
- इस सृष्टि में घटित होने वाली प्रत्येक घटना की 5 हजार वर्ष बाद पुनरावृत्ति होती है।
- प्रत्येक मनुष्यात्मा अपने भाग्य और समय का निर्माता स्वयं होता है।
- स्वयं का शिक्षक बनकर स्वयं को शिक्षा देना ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है।
- दूसरों को आगे बढ़ाना ही स्वयं आगे बढ़ना है।
- स्वयं पर उपकार करना ही सबसे बड़ा परोपकरार है।
- देह अभिमान का त्याग ही सबसे बड़ा त्याग है।
- ईश्वरीय ज्ञान ही मन पर नियंत्रण का सर्वश्रेष्ठ साधन है।
- महान चिंतन से ही महान कर्म होता है।
- आपका सकारात्मक चिंतन ही आपकी सफलता का मुख्य सूत्रधार है।
- सदैव याद रखिये – परमात्मा सदा आपको देख रहा है।
- कर्मो की ध्वनि शब्दों से बहुत तीव्र होती है।
- मन को सरल और सहज बनाना ही बालक से मालिक बनना है।
- सहनशीलता मनुष्य को शहंशाह बनाती है।
- व्यर्थ संकल्पों का समर्पण ही सर्वश्रेष्ठ समर्पण है।

यदि मैं एक क्षण खुश रहता हूँ तो इससे मेरे अगले क्षण में भी खुश होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

ॐ शांति ॐ

सलाहकार संपादक

राजयोगी बी. के. करुणा जी

ईश्वर धर्म जीवन संबंधित भारत की सर्वप्रथम प्रश्नोत्तरी मासिक पत्रिका

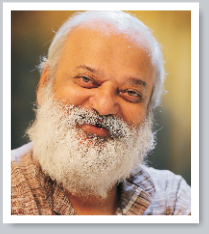

सुख शांति समृद्धि के संपादक का परिचय

सर्जन और संपादन में व्यस्त वरिष्ठ पत्रकार जीतु सोमपुरा पत्रकारत्व और धार्मिक टी.वी. चैनल जगत में पिछले ३८ साल से जुड़े है। वर्तमान में वे भक्तों के प्रश्न - संतो के उत्तर की पत्रिका सुख शांति समृद्धि मासिक पत्रिका के संपादक व मालिक है। हमारे देश के पूज्यनीय साधु संत के जीवन और सेवा कार्यो की डॉक्यूमेंट्री एवं विविध धार्मिक कार्यक्रमों का निर्माण व दिग्दर्शन भी करते है।

पत्रकारिता

मुंबई के अग्रणीय जन्मभूमि ग्रुप के गुजराती दैनिक में १८ साल पत्रकार थें। वर्षो तक साधु संतो की अमृतवाणी का संकलन दर्शकों तक पहुंचाने के लिये सैकड़ो संकलित प्रेरणादायी लेख लिखें । वर्तमान में प्रसिद्ध गुजराती दैनिक मुंबई समाचार में प्रत्येक सोमवार को उनकी ''मारी यात्रा'' कॉलम में साधु संतो की मुलाकात प्रकाशित होती है।

धार्मिक टी.वी. चैनल

देश विदेश में सर्वप्रथम धार्मिक कार्यक्रमों की गंगा बहाने वाली गुजराती चैनल ''गुर्जरी'' में धार्मिक प्रोग्राम के मैनेजर थें। गुर्जरी के ५ साल बाद आस्था चैनल के उदय से लेकर आज तक उन्होंने आस्था, संस्कार, एम.टी.एन.एल. - बी.एस.एन.एल. के लिये आई.ओ. एल.की आई.पी. टी.वी. चैनल ज्ञान, यु. के. की एम. ए. टी.वी. चैनल, भक्ति सागर तथा विश्वविख्यात ब्रह्माकुमारी संस्था की पीस ऑफ माइंड चैनल में अपना श्रेष्ठतम योगदान दिया। ई.टी.वी. गुजराती के लिये २ साल से अधिक समय तक धार्मिक कार्यक्रम उपलब्ध करायें।

फिल्म – टी.वी. सीरियल

गुजराती भाषा की तीन फिल्में और तीन टी.वी. धारावाहिक लिखी है। एक फिल्म को गुजरात सरकार द्वारा श्रेष्ठ पटकथा लेखक का अवार्ड मिला है। विश्वविख्यात ब्रह्माकुमारी संस्था की पीस ऑफ माइंड चैनल पर प्रसारित हो रही सुख शांति समृद्धि सीरियल के ४५० से अधिक कायक्रमों का निर्माण और दिग्दर्शन किया है। जिसमें भारत के २०० से अधिक साधु संतो की मुलाकात भी शामिल है।

विडियो पत्रिका

गुजरात के पूज्य वरिष्ठ महामण्डलेश्वर श्री भारती बापू द्वारा निर्मित गुजराती के प्राचीन २०० भजन के इतिहास की ५० घंटे की डी वी डी के सम्पूट की परिकल्पना दिग्दर्शन एवं पुरुषार्थ किया है जिसका गुजरात के अग्रणी जी.टी.पी.एल. नेटवर्क की भक्ति चैनल पर प्रसारण हो रहा है।

किताब

स्वामिनारायण संप्रदाय के परम् पूज्य श्री प्रमुख स्वामी जी महाराज की मुलाकात पर आधारित ''अक्सर संवाद'' पुस्तक के लेखक है। दो और किताब प्रकाशित होने जा रही है। जिनमें ब्रह्माकुमारी संस्था के अग्रणी राजयोगिनी दादी प्रकामशणी जी के प्रवचनों के अंश का प्रश्नोत्तरी रुप में संकलन है तथा दूसरी किताब पुष्टी संप्रदाय के संत श्री इंदिरा बेटी जी की मुलाकात पर आधारित है।

डीजिटल लाईब्रेरी

वैष्णव संप्रदाय के पूज्यपाद गोस्वामी १०८ श्री इंदिरा बेटी जी के अद्भुत जीवन और विभिन्न सेवाओं पर आधारित डीजिटल लाईब्रेरी प्रोजेक्ट का निर्माण किया है।

यह संसार हार और जीत का खेल है – इसे नाटक समझ कर खेलो

- सेवा भले करो लेकिन व्यर्थ खर्च नहीं करो।
- व्यस्त मन–बुद्धि को सेकण्ड में स्टॉप कर लेना ही सर्वश्रेष्ठ अभ्यास है।
- परिस्थितियों की हलचल के प्रभाव से बचना है तो विदेही स्थिति में रहने का अभ्यास करो।
- सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो, प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करो।
- स्वयं को इस पुरानी दुनिया में गेस्ट समझकर रहो तो संस्कारों और संकल्पों को गेट आउट कर सकेंगे।
- जिनका मिजाज मीठा है वह भूल से भी किसी को दुख नहीं दे सकते।
- अपनी नज़रों में बाप को समा लो तो माया की नज़र से बच जायेंगे।
- सर्व की मनोकामनायें पूर्ण करने वाले ही कामधेनु हैं।
- वायदों को फ़ाइल में नहीं रखो, फ़ाइनल बनकर दिखाओ।
- बापदादा के डायरेक्शन को क्लीयर कैच करने के लिये मन–बुद्धि की लाइट क्लीयर रखो।
- व्यर्थ की चेकिंग अटेन्शन से करो, अलबेले रूप में नहीं।
- वायुमण्डल का परिवर्तन करने का साधन है पॉजिटिव संकल्प और शक्तिशाली वृति।
- सदा उत्साह में रहना और दूसरों को उत्साह दिलाना यही आपका आक्यूपेशन है।
- अनुभवी आत्मा कभी भी किसी बात से धोखा नहीं खा सकती, वह सदा विजयी रहती है।

यदि आप अपना अवगुणों रूपी कचरा भगवान को दे दें तो कोई भी व्यक्ति आप पर कीचड़ नहीं उछालेगा।

धर्म का मूल तत्व ईश्वरीय गुणों की जीवन में प्रत्यक्ष धारणा है।

- ज्ञानी तू आत्मा बच्चों में क्रोध है तो इससे बाप के नाम की ग्लानी होती है।
- शिक्षा दाता के साथ रहमदिल बन सहयोगी बनो।
- अन्दर की सच्चाई सफाई प्रत्यक्ष तब होती है जब स्वभाव में सरलता हो।
- सम्पूर्णता के दर्पण में सूक्ष्म लगावों को चेक करो और मुक्त बनो।
- बाप की पालना का रिटर्न है – स्व और सर्व को परिवर्तन करने में सहयोगी बनना।
- मेरे को तेरे में परिवर्तन करना अर्थात भाग्य का अधिकार लेना।
- जब बोल में स्नेह और संयम हो तब वाणी की एनर्जी जमा होगी।
- पवित्रता आपके जीवन का मुख्य फाउन्डेशन है, धरती पर ये धर्म न छोड़िये।
- नॉलेजफुल वह है जो माया को दूर से ही पहचान कर स्वयं को समर्थ बना ले।

अपने स्वभाव को सरल बना दो तो सब कार्य सरल हो जाऐंगे।

- व्यर्थ संकल्पों की हथौडी से समस्या के पत्थर को तोड़ने के बजाए हाई जम्प देंकर समस्या रुपी पहाड़ को पार करने वाले बनो।
- मन को प्रभू की अमानत समझकर उसे सदा श्रेष्ठ कार्य में लगाओ।
- समान और सम्पूर्ण बनना है तो स्नेह के सागर में समा जाओ।
- समय की रफ़्तार के प्रमाण पुरुषार्थ की रफ़्तार तीव्र करो।
- व्यर्थ सम्बन्ध–सम्पर्क भी एकाउन्ट को खाली कर देता है इसलिए व्यर्थ को समाप्त करो।
- बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता।
- योग रुपी कवच को पहनकर रखो तो माया रुपी दुश्मन वार नहीं कर सकता